Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 07, July - 2024

DOIs:10.2018/SS/202407008 --:-- Research Paper / Article / Review

प्रेमचंद की कहानियों का स्वरूप तथा कफ़न पर समालोचकों की दृष्टि का मूल्यांकन

अंशु शेखर
शोधार्थी, हिंदी विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना - 800020
ई. मेल - anshushekhar15@gmail.com

शोध सार: प्रेमचंद कहते हैं कि "कहानी एक रचना है। जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति - भाँति के फूल बेल - बूटे सने हुए हैं, बल्कि एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।"आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को कहानी तथा उपन्यास में प्रस्तुत करने का मूल श्रेय प्रेमचंद को ही है। गाँव, शहर तथा महानगर के परिवेश से पूरी तरह परिचित हिंदी साहित्य के इस श्रेष्ठ तथा मूर्धन्य कहानीकार प्रेमचंद के कथा दृष्टि की विवेचना करते हुए कफ़न कहानी पर हिंदी के प्रतिष्ठित विद्वान एवं समालोचकों की दृष्टि का मूल्यांकन करना ही इस शोध आलेख का अभीष्ट है ।

बीज शब्द : कथाकार प्रेमचंद, कथा का स्वरूप, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, कफ़न, संवेदना पक्ष, आलोचक - दृष्टि, मूल्यांकन ।

1. मूल आलेख:

प्रेमचंद हिंदी कथा साहित्य के अन्यतम कलाकार हैं। साहित्य क्षेत्र में प्रेमचंद उर्दू लेखक की हैसियत से आये थे। हिंदी में लिखने की प्रेरणा इन्हें हिंदी के प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत् मन्नन द्विवेदी से मिली। इसके पश्चात् महावीर प्रसाद द्विवेदी से परिचय प्राप्त करने के बाद इन्होंने हिंदी की सेवा करने का व्रत लिया । 'सरस्वती' पत्रिका में इनकी कहानियाँ प्रकाशित होने लगी। प्रेमचंद का सबसे पहला कहानी संग्रह सन् 1915 ई० में हिंदी में प्रकाशित हुआ, जिसकी भूमिका मन्नन द्विवेदी ने लिखी। हिंदी में कहानी साहित्य का वास्तविक प्रारंभ प्रेमचंद से ही होता है। उनके पहले की कहानियों में जीवन के तथ्यों का उद्घाटन नहीं हुआ था। प्रेमचंद ने कहानी कला को प्राचीन परंपरा से मुक्त कर उसे नवीन पथ पर अग्रसर किया। उनकी कहानियाँ लंबे समय के अंतर्गत लिखी गई हैं इसलिए इनमें कलात्मक विकास के कई रूपों का परिलक्षित होना स्वाभाविक है। प्रेमचंद उपन्यासकार के नाते तो महान हैं ही, कहानीकार के नाते और भी महान हैं। यह सच है कि पीछे चलकर उनका उपन्यासकार रूप ही अधिक उभरकर प्रकाश में आया लेकिन वह पहले कहानीकार ही थे। इस क्षेत्र में उनकी सफलता और लोकप्रियता अद्वितीय है। वे कहानी लेखन कला के अग्रदूत थे। इन्होंने कहानी को बिल्कुल नया रूप दिया है। "वह पहले व्यक्ति थे जो सामग्री के लिए गाँवों की ओर गए और जिन्होंने सीधे-साधे ग्रामीणों के घटनाहीन जीवन को अपनी कहानियों का विषय बनाया। उन्होंने धरती के पुत्रों, कलर्कों और बड़े बड़े व्यापारियों के मामूली मुंशियों के मन की हलचल को व्यक्त किया। वे उनके संघर्षों- प्रलोभनों और कमजोरियों, उनकी आशाओं और आशंकाओं, उनकी सहज धार्मिकता और अंधविश्वासों से भली भाँति परिचित थे । किसान का मन उनके लिए खुली पुस्तक के समान था।"

डॉ० सत्येन्द्र ने अपनी पुस्तक "प्रेमचन्द और उनकी कहानी कला" में प्रेमचन्द के कहानी संबंधी सिद्धांतों को एकत्र करते हुए लिखा है "प्रेमचंद के विविध समय के इन एकत्रित मतों के समय के अनुसार परिवर्तन दीखता है जिसने घटना को कहानी की इकाई माना, आगे चलकर वही अनुभूति को प्रधान बतलाने लगा। पहले आदर्श और उपयोगिता को जो प्रधान समझ रहा था, बाद में वह मनोरंजन और मानस - तृप्ति को प्रधानता देने लगा। नीति के स्थान पर सौंदर्य प्रेम हुआ और आदर्श ने आदर्श न रहकर

आदर्शोन्मुख यथार्थ में परिणति पायी। इस भाव - विकास के अनुसार ही प्रेमचंद की विविध प्रकार की कहानियाँ मिलती हैं।" डॉ० सत्येन्द्र ने प्रेमचंद की कहानियों को तीन कालों में विभाजित किया है - (क) 1907 से 1920 तक आरंभिक काल (ख) 1920 से 1930 तक विकासकाल और (7) 1930 से 1936 तक उत्कर्ष काल। अंतिम छह वर्षों में प्रेमचंद ने आधी से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इन तीनों काल की कहानियों की शैली और कला के विकास की रेखाएँ स्पष्ट हैं।

यों तो प्रेमचंद की कहानियों का वर्गीकरण भिन्न - भिन्न दृष्टित्रों से किया जाता है लेकिन सामूहिक रूप से हम उनकी कहानियों को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं। "प्रथम श्रेणी की कहानियों में लेखक का कोई आदर्श होता है और वह उसी आदर्श की अभिव्यक्ति चाहता है, जैसे बड़े घर की बेटी । द्वितीय श्रेणी की कहानी वह है जिसमें लेखक किसी पात्र विशेष का चरित्र - चित्रण करना चाहता है। ऐसी चरित्र प्रधान कहानियों में 'आत्माराम', 'नमक का दारोगा' आदि कहानियाँ काफी प्रसिद्ध हैं। तृतीय श्रेणी की कहानियों में हम लेखक का उद्देश्य किसी विशेष समस्या का विवेचन पाते हैं जैसे 'अँधेरे' आदि कहानियाँ। कुछ कहानियाँ वातावरण प्रधान हैं- जैसे- 'शतरंज के खिलाडी'।

"भारतीय हृदय को, विशेषकर भारतीयों की बहुसंख्यक ग्रामीणों के हृदय को जितना प्रेमचंद ने समझा है, उतना हिंदी साहित्य में किसी ने भी नहीं- यह निर्विवाद सिद्ध है। बाबू श्यामसुन्दर दास लिखते हैं- "प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक समस्याओं पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। उनकी भाषा शैली कहानियों के बहुत उपयुक्त हुई है और उनके विचार भी सब पढ़े लिखे लोगों के विचारों से मिलते-जुलते हैं।" यही कारण है कि प्रेमचंद की कहानियाँ सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। पण्डित गणेश प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं - "प्रेमचंद चरित्र-चित्रण में अपनी सानी नहीं रखते - इनमें मुख्य बात यह है कि ये महाशय कहानी या उपन्यास जो कुछ भी लिखते है वह सोद्देश्य रूप से। उनकी हर एक कहानी में जन समाज के लिए कोई न कोई उपदेशात्मक संदेश रहता है। सामाजिक अथवा नैतिक कुरीतियों का निवारण इनका लक्ष्य रहता है।"

प्रेमचंद का कथन कभी उग्र नहीं होता, बल्कि जो कुछ ये कहते हैं इस प्रकार की मीठी व्यंग्यपूर्ण भाषा में कहते हैं कि पाठक को कटुता का अनुभव कदापि नहीं होता, बस इसी में प्रेमचंद का कौशल है। एक और मुख्य बात इनकी लेखन - कला के विषय में यह है कि ये मनुष्य जीवन की साधारण घटना को लेकर उसका निष्कर्ष निकालते समय मनुष्य हृदय के गूढ़ातिगूढ़ रहस्यों को मनोविज्ञान के नियमों के ढंग पर ऐसा सजाकर धर देते हैं कि देखते ही बनता है। प्रेमचंद की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है- स्थानीय रंग का सफलतापूर्वक अंकन । इससे स्पष्ट पता चलता है कि प्रेमचंद में निरीक्षण शक्ति अत्यंत सूक्ष्म एवं विलक्षण है।

प्रेमचंद भारतीय जनता के मूक कथाकार हैं। उन्होंने समाज के प्रत्येक अंग को अपनी कहानियों में स्पर्श किया है। इसलिए इनकी कहानियों के विषय की सीमा असीम है। इनके पास इतनी व्यापक सहानुभूति थी कि इन्होंने जन-जीवन के प्रत्येक पहलू को अपनी कहानी का विषय बना डाला। प्रेमचंद के पात्र समाज के प्रत्येक स्तर के हैं। इनकी कहानियों में घटना- कौतूहल कम है, चरित्र चित्रण की बारीकियाँ अधिक । मानव - चरित्र के विविध पक्षों का उद्‌घाटन ही इनकी कहानियों का मूल उद्देश्य रहा है। इनकी कहानियों की शिल्प विधि भी अपने ढंग की निजी और अकेली है। कहानी में कथा के रस को डाल कर कहना, इनकी अपनी विशेषता है।

प्रेमचंद की कहानियों की भाषा आदर्श कहानी के बिल्कुल उपयुक्त है। उनकी भाषा हिंदुस्तानी है- सारे हिंदुस्तान की जनता की सरल भाषा। उन्होंने अपनी कहानियों को भाषा के बंधन में नहीं बाँधा है। भावों की सहज अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने अंग्रेजी, फ़ारसी, उर्दू , संस्कृत, अरबी आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनकी भाषा में आकर्षण भी है, प्रवाह भी। कथनोपकथन में स्वाभाविकता भी है एवं पात्रोचितता भी । वस्तुतः प्रेमचंद भाषा के सम्राट है क्योंकि उनकी भाषा में बल और संयम है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद हिंदी साहित्य के एक जीवंत कहानीकार हैं।

2. कफ़न कहानी का कथानक, संवेदना पक्ष तथा समालोचकों की दृष्टि का मूल्यांकन :

कफ़न में मुख्य रूप से तीन चरित्र हैं- घीसू, माधव और बुधिया । माधव की पत्नी बुधिया भीतर प्रसव वेदना से छटपटा रही है और बाहर घीसू और माधव अलाव के पास बैठे भुने हुए आलू खाने में लगे हैं। उधर बुधिया असह्य पीडा से चीख रही है इधर बाप-बेटा ठाकुर के यहाँ की दावत याद कर रहे हैं। इधर वे आलू खाकर अलाव के निकट ही सो जाते हैं उधर छटपटाती हुई बुधिया की

मृत्यु हो जाती है। सुबह बुधिया की मौत पर दोनों रोना पीटना शुरू करते हैं। कुनबे के लोग जुटते हैं अंतिम संस्कार की तैयारी होने लगती है। घीसू और माधव, कफ़न आदि की व्यवस्था के लिए निकलते हैं। जमींदार से दो रूपये मिलने के बाद घीसू गाँव भर घूमकर पाँच रूपये से कुछ ज्यादा रकम जुटा लेता है। इसके बाद बाप-बेटे कफ़न खरीदने के लिए शहर जाते हैं। दो-चार जगह कफ़न देखने के बाद दोनों शराब की दूकान पर पहुँचते हैं। जी भर कर शराब पीते हैं, दावत उड़ाते हैं। बचा हुआ खाना भिखारी को दान देते है और फिर नशे में मस्त होकर निर्गुण गाते हैं और निढाल होकर गिर पड़ते हैं। कहानी यहीं खत्म हो जाती है।

कहानी कुल तीन खंडों में हैं। पहले खंड में प्रेमचंद ने चरित्र नायकों का चित्र खींचा है। प्रेमचंद स्वयं बताते हैं कि विचित्र था जीवन इनका । यह विचित्रता तीन बातों पर निर्भर थी। पहली बात यह कि दोनों अव्वल दरज़े के कामचोर थे। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम। माधव उघाते काम करता तो घंटे भर चीलम पीता।

दूसरी बात कि दोनों में संतोष और धैर्य, संयम और नियम की पराकाष्ठा है। प्रेमचंद लिखते हैं अगर दोनों साधु होते, तो उन्हें संतोष और धैर्य के लिए संयम और नियम की बिल्कुल ज़रूरत न थी। यह तो इनकी प्रकृति थी। घर में मिट्टी के दो चार बर्तन के सिवा कोई संपत्ति नहीं, फटे चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढांके हुए जिए जाते थे।

तीसरी बात यह है कि दोनों पात्र विचारशील हैं वे मेहनत करने वाले अपने साथ के लोगों का हश्र देख रहे थे। इसलिए घीसू किसानों के विचार शून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठक बाजों की उत्सित मण्डली में जा मिला था।

यानी जिस समाज में हाड़-तोड़ मेहनत करने वाले भूखों मरने को विवश हों और आराम तलब लोग उनके मेहनत के बल-बूते मौज उड़ा रहे हों, वहाँ घीसू का यह कदम विचारशील है। शोषक वर्ग की दुर्बलताओं की समझ इनकी बेपरवाही के मूल में है। प्रेमचंद लिखते हैं- "मगर इन दोनों को लोग उसी वक्त बुलाते, जब दो आदमियों से एक का काम पाकर भी संतोष कर लेने के सिवा और कोई चारा न होता।" आमतौर पर शासक या जमींदार वर्ग के सामने किसान-मजदूर जिस तरह बेबस होते हैं, घीसू-माधव के सामने जमींदार या शासक उसी तरह बेबस है।

कफ़न कहानी पर दलित आलोचकों ने आक्षेप उठाये हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की मुख्यतः दो आपत्तियाँ हैं (1) बुधिया को अकेले मर जाने देना (2) दलित पात्रों को निकम्मा और कामचोर चित्रित करके दलितों के बारे में चली आ रही सवर्ण धारणा को प्रतिष्ठित करना।

बुधिया की मृत्यु पर यह सवाल उठाया जाता है कि बुधिया के मरने के बाद कुनबे के लोग खास तौर से जो औरतें आती हैं वे उस समय क्यों नहीं आती जब बुधिया प्रसव वेदना से चीख-चिल्ला और छटपटा रही थी। यह अस्वाभाविक तो है पर असंभव नहीं है। देर शाम तक जब घीसू और माधव आलू खाने में लगे थे तो कुनबे के लोग उस नक्त गहरी नींद में हो सकते थें। आलू खाने के लोभ में घीसू - माधव बुधिया को देखने भीतर तो जा नहीं रहे थें, वे अगल बगल किसी को बुलाने क्या जायेंगे, वे कुनबे के ही लोग हैं , जो अगले दिन घीसू- माधव के कफ़न ढूंढने जाने के उपरांत बुधिया के शव की देखभाल करते हैं। इसलिए ऐसा कहना कि प्रेमचंद ने इस कहानी में दलितों की असंवेदनशीलता को उजागर किया है और इस आधार पर इस कहानी को दलित विरोधी बतलाकर प्रेमचंद को कटघरे में खड़ा करना न्यायोचित नहीं है।

वहीं दूसरी तरफ डॉ० धर्मवीर कफन कहानी में बुधिया को बलात्कार की शिकार महिला बतलाते हैं। उनके अनुसार बुधिया के पेट में जो बच्चा था वह जमींदार का था। यही कारण था कि जमींदार ने अंतिम संस्कार के लिए जी में कुढ़ते हुए दो रुपये निकालकर फेंक दिए। जैसे सिर का बोझ उतारा हो। पर यह कोई सटीक तर्क नहीं जान पड़ता । यह डॉ. धर्मवीर की मात्र कोरी कल्पना लगती है।

निर्मल वर्मा 'कफ़न' कहानी पर कुछ अलग ही टिप्पणी करते हैं। इनके अनुसार- "जिस क्षण बाप-बेटे ने घर की औरत के कफ़न के पैसों से शराब का कुल्लड़ मुँह में लगाया था, उस क्षण पहली बार हिंदी साहित्य में व्यक्ति ने अपनी स्वतंत्रता का स्वाद भी चखा था, जब प्रेमचंद के समाज में व्यक्ति का जन्म हुआ। यह जन्म, मृत्यु और श्मशान की छाया में हुआ। दो पियक्कड हिंदुस्तानियों का मुक्ति समारोह ।"

राजेन्द्र यादव की दृष्टि में "इस कहानी में घीसू - माधव को डीह्यूमनाईजेशन किया गया है। जिसके लिए दोषी व्यक्ति नहीं, सामाजिक विसंगतियाँ हैं।" इनके अनुसार निर्मम सामंती व्यवस्था मनुष्य को कैसे अमानवीय बनाती है, उसका जीवंत चित्रण इस कहानी में है।

3. निष्कर्ष:

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद की कहानियों का स्वरूप निश्चय ही आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रहा है जो कि कफ़न तक आते आते ग्रामीण मज़दूर शोषकों के यथार्थ का सजीव वर्णन करने में सर्वोत्कृष्ट रूप से सफल रहा है।

जो कुछ हो पर कफ़न कहानी में घीसू की यह पंक्तियाँ कि "बुधिया अगर बैकुण्ठ न जायेगी तो क्या ये मोटे - मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं।" के होते हुए इस कहानी को दलित विरोधी कहना उचित नहीं जान पड़ता। घीसू और माधव का जन्म भले ही दलित वर्ग में हुआ हो, पर इनका चरित्र दलित नहीं है। घीसू कहता है कि "सारा दिन दौड़ते हो गया" अर्थात् इन दोनों ने बुधिया को बचाने के लिए दिन भर मशक़्क़त की। यही कारण है कि घीसू कहता है कि यही पाँच रूपये जो बुधिया की मृत्यु के उपरांत मिले, यदि पहले मिल जाते तो दवा-दारू करा लेते। कहानी की यह पंक्ति की "यहाँ तो ओझा भी एक रूपये माँगता है।" अर्थात् घीसू- माधव को संवेदनहीन पात्र कहने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति भी देखना आवश्यक है।

इस प्रकार 'कफ़न' निश्चय ही प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानी ठहरती है जो सामाजिक कुप्रथाओं को उजागर कर भविष्य में उसके लिए कफ़न तैयार करने का कार्य करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. मिश्र 'प्रभाकर', चंद्रभानु. प्रेमचन्द की कहानी कला, नन्दन प्रकाशन, विद्यामन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ-३, प्रथम संस्करण, पृष्ठ सं०- 25, 26, 27, 28, 34, 35, 42, 43, 47, 49.

2. नीलमणि, प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ [एक समीक्षा] ,रवि प्रकाशन, कृष्ण प्रकाश रोड, गया (बिहार), प्रथम संस्करण - 1962, पृष्ठ सं० - 1, 10, 11, 21, 22, 24, 48, 49, 52.